झाबुआ जिले में एड्स रोग का अध्ययन

*डॉ. पी. के. संघवी ** शहनाज कुरैशी

शोधपत्र-प्राणीशास्त्र

एड्स (एक्वायर्ड एम्यूनो डिफिसिएन्सी सिन्ड्रोम्स) एक जानलेवा बीमारी है जो कि एक वायरस एच.आई.वी. (ह्युमन एम्यूनो डिफिसिएन्सी वायरस) की वजह से होता है। एवं व्यक्ति की प्रतिरक्षा तंत्र को प्रभावित करता है। जिसकी वजह से व्यक्ति में रोगों से लड़ने की क्षमता कम हो जाती है एवं उसके शरीर में कई जानलेवा संक्रमण हो जाते है। अंत में मृत्यु हो जाती है। आदिवासी अंचल झाबुआ में एड्स की भयावह बिमारी झाबुआ जिले में पैर पसार चुकी है। 2008 में कुल 91 एच.आई.वी. पॉजीटीव केसेस पाए गए थे। जिसमें पुरूष सर्वाधिक 54 तथा महिला 37 हैं। 20 से 40 वर्ष की उम्र में एड्स रोगी ज्यादा पाए गए। (संघवी 2008) आदिवासी अंचल में इस बिमारी के पाए जाने से इंटर्नषीप के दौरान एड्स से पिड़ित रोगियों का एक सर्वे कार्य संपन्न किया गया। इस सर्वे कार्य में जिला चिकित्सालय से वर्ष 2004 से 2008 तक के एड्स रोगियों की संख्या ज्ञात की गई है एवं इन संख्या को वर्ष 2009 के एड्स रोगियों के साथ तुलना की गई। इसका विवरण निम्न तालिका में दिया गया है।

तालिका क्र.1 झाबुआ जिले में एड्स रोगियों की संख्या का तुलनात्मक अध्ययन

YEAR	MALE +VE CASES	FEMALE +VE CASES	TOTLE +VE CASES
2004	O3	02	05
2005	03	04	07
2006	02	01	03
2007	02	01	03
2008	44	31	75
2009 UP TO AUGUST	29	10	39
Total	**79**	**46**	**125**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि एड्स रोगियों की संख्या वर्ष 2004 से लगातार बढ़ती जा रही हैं। उल्लेखनीय है कि झाबुआ जिले के आदिवासी लगातार मजदूरी के लिए इस जिले से राजस्थान एवं गुजरात की ओर जाते है। यदि एड्स बिमारी को रोका नहीं गया तो यह बिमारी इन प्रदेषों में भी फैलने का अंदेषा हो सकता है। उपरोक्त तालिका के अनुसार यह भी स्पष्ट है कि जिले में कुल 125 एच.आई.वी. पॉजीटीव केसेस पाए गए है। जिसमें पुरूष सर्वाधिक 79 तथा महिला 46 हैं। 20 से 40 वर्ष की उम्र में एड्स रोगी ज्यादा पाए गए हैं। मेडिकल लेबोरेटरी मेन्युअल वाल्युम –2 के अनुसार विष्व में 50 मिलियन से अधिक एड्स रोगी पाए गए है। मध्य प्रदेष में 3 लाख से अधिक एचआईवी पाजीटिव केसेस पाए गए है।

एक अध्ययन में यह भी पाया गया है कि इन एचआईवी पाजिटिव रोगियों का तापक्रम सामान्य से ज्यादा पाया गया है। 14 रोगियों में 100 डिग्री तापक्रम रिकार्ड किया गया है एवं 16 रोगियों में डायरिया पाया गया 4 रोगियों की मृत्यु भी हो गई, 25 रोगियों में ट्युबर क्लोसिस एवं त्वचा रोग पाया गया। 20 – 40 वर्ष तक की उम्र के ज्यादातर रोगी पाए गए । एचआईवी पाजिटिव से होने वाले एड्स की दवाई वैज्ञानिक खोजने में लग है, झाबुआ जिले में यह भयावह बिमारी कुछ समय बाद एक उग्र रूप ले लेगी। इसको रोकने का प्रयास करना होगा, एन्टीवायरल ड्रग की व्यवस्था करना होगी। जनजागृति के कार्यक्रमों को प्रमुखता के साथ आयोजित करना होगा। वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया है कि एड्स ग्रसित व्यक्ति को भोजन में अतिरिक्त मिनरल्स, विटामिन्स इत्यादि अधिक मात्रा में दिया जाए तो प्रतिरोधक क्षमता बढ़ सकती है एवं जीवन लम्बा हो सकता है(संध्या यादव 2003)। दूसरा सुझाव यह दिया गया है कि यह वायरस लिम्फोसाइट कोषिका को नष्ट करने लगता है, जो कि इम्युनो सिस्टम की आधार कोषिका है। ऐसी स्थिति में लिम्फोसाइट आधार चिकित्सा को महत्व दिया जाना चाहिए।(संघवी 2008)

संस्था प्राचार्य डॉ. आर. एन. सक्सेना एवं जिला चिकित्सालय अधिकारियों का सहयोग के लिए आभार।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. संघवी पी. के. (2008) – एड्स रोगियों का अध्ययन – शोध समीक्षा एवं मूल्यांकन – नव. जन. 2008 वाल्यूम–2, संस्करण – 5, पेज. न. 694 2. मेडिकल लेबोरेटरी मेन्यूअल – वाल्युम – 2 3. यादव संध्या एवं सुजीत कुमार(2003) – रोल ऑफ डाइट इन एड्स डिसीज़ – एग्रोबायोस न्यूज़ लेटर – वाल्युम–2, संस्करण–5, पेज. नं. 16

* प्राध्यापक एवं विभाग अध्यक्ष, प्राणीशास्त्र विभाग, शास.पी.जी. महाविद्यालय झाबुआ।
** एम.एस–सी अंतिम वर्ष इंटर्नशीप छात्रा, प्राणीशास्त्र विभाग, शास. पी.जी. महाविद्यालय, झाबुआ।